CHAPTER 14

पहलवान की ढोलक

PAGE 116, अभ्यास - पाठ के साथ

12:1:14:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ:1

कुश्ती के समय ढोल की आवाज़ और लुट्टन के दाँव-पेंच में क्या तालमेल था? पाठ में आए ध्वन्यात्मक शब्द और ढोल की आवाज़ में आपके मन में कैसी ध्वनि पैदा करते हैं, उन्हें शब्द दीजिए।

उत्तर: कुश्ती के समय ढोल की आवाज़ और लुट्टन के दांव-पेंच में अद्भुत् सामंजस्य था। लुट्टन को ढोल की प्रत्येक थाप एक नया दाँव-पेंच सिखाती थी।

1. चटधा,गिड धा- आजा भिड़ जा
2. चटगिड धा -मत डरना
3. चटाकचट धा - उठाकर पटक दे
4. धिनाधिना,धिक्धिना- चित करो
5. ढाक धिनातिरकिटतिना- दाँव काटो,बाहर हो जाओ।

ढोल के ध्वन्यात्मक शब्द हमारे मन में उत्साह के साथ आनन्द का संचार भी करते हैं।

12:1:14:प्रश्न - अभ्यास - पाठके साथ:2

कहानी के किस -किस मोड़ पर लुट्टन के जीवन में क्या -क्या परिवर्तन आए?

उत्तर: इस कहानी में लुट्टन के जीवन में अनेक परिवर्तन आये जो निम्नलिखित हैं:

1. लुट्टन का बचपन में ही अनाथ हो जाना ।
2. विधवा सास द्वारा उसका पालन-पोषण किया जाना।
3. सास पर हुए अत्याचारों का बदला लेने के ध्येय से पहलवान बनना ।
4. बिना गुरु के ही पहलवानी/कुश्ती सीखना और ढोलक को ही अपना गुरु मानना ।
5. चाँद सिंह और काला खां जैसे पहलवानों को धूल चटाकर अजेय पहलवान बनकर “राज-पहलवान का दर्ज़ा हासिल करना।
6. पत्नी की मृत्यु का दुःख सहना और दो छोटे बच्चों का

भार संभालना।

7. जीवन के पंद्रह वर्ष राजा की छत्रछाया में बिताना किन्तु उनके निधन के बाद उनके पुत्र द्वारा राजमहल से निकाला जाना।
8. वापस गाँव लौटकर गाँव के बच्चों को पहलवानी सिखाना।
9. गाँव में आई महामारी में उसके दोनों बच्चों की मृत्यु और उनके शव को अपने कंधे पर ले जाकर नदी में बहा आना।
10. महामारी के समय अपने ढोलक के द्वारा लोगों में उत्साह का संचार करना ।

12:1:14:प्रश्न - अभ्यास - पाठके साथ:3

लुट्टन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है?

उत्तर: लुट्टन ने कभी किसी गुरु से कुश्ती नहीं सीखी, हो सकता है कि उन्हें कोई गुरु न मिला हो या किसी ने उन्हें अपना शिष्य स्वीकार न किया हो। जो भी हुआ हो लुट्टन ने पहलवानी सीखी और एक अजेय पहलवान बना। लुत्तन ने

पहलवानी ढोलक के ताल के साथ साथ सीखे थे किसी गुरु से नहीं। ढोलक से निकलती हर ताल के साथ उसके दाव-पेंच जुड़े थे जैसे ढोलक की ताल उसे आदेश दे रही हो । जब कभी ढोलक पर चोट पड़ती उसकी शरीर में पहलवानी का जोश भर जाता था। इसलिए लुट्टन पहलवान ने कहा कि मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है

12:1:14:प्रश्न - अभ्यास - पाठके साथ:4

गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान का ढोल क्यों बजाता रहा?

उत्तर: गाँव में महामारी और सूखे के कारण चारों ओर निराशा का माहौल और मौत का सन्नाटा था। वही सन्नाटा अपने बेटों की मौत के कारण लुट्टन के दिल में भी झलक रहा था। ऐसे कठिन समय में पहलवान के ढोलक की ताल निराश गावं वालो के दिल को उमंग से भर देती थी। ढोलक गावं वालो को महामारी से लड़ने की प्रेरणा देती थी। शायद यही कारण था कि पहलवान अपने पुत्रो की मृत्यु के बाद भी ढोलक बजता रहता था। शायद वह अपने पुत्रो के मृत्यु के

शोक को कम करना चाहता था तथा महामारी चुनौती देना चाहता था।

12:1:14:प्रश्न - अभ्यास - पाठके साथ:5

ढोलक की आवाज़ का पूरे गाँव पर क्या असर होता था?

उत्तर: इस कहानी में लुट्टन की ढोल की भूमिका किसी वीर कवि और शायर से कम नहीं थी। जिसकी आवाज ने मौत की खामोशी और रात की खौफ को कम कर दिया। ढोलक की आवाज से महामारी से पीड़ित लोगों की नसों में बिजली दौड़ जाती थी। ढोल बजने पर लोगो को खुलती के दृश्य याद आ जाते जो उन्हें महामारी से लड़ने के लिए प्रेरित करती थी। ढोलक ने उनकी बीमारी या उनके बुखार को कम नहीं किया परन्तु उन मृत जीवन की नसों में जीवनशक्ति भर कर उन्हें बीमारी से लड़ने के लिए प्रेरित किया।

12:1:14:प्रश्न - अभ्यास - पाठके साथ:6

महामारी फैलने के बाद गाँव में सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य में क्या अंतर होता था?

उत्तर: महामारी के प्रकोप के बाद गाँव में सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य में बड़ा अंतर था। सूर्योदय के समय दिल दहला देने वाले रोने के बावजूद लोगों के चेहरे पर एक चमक थी। लेकिन सूर्यास्त के बाद सारा परिदृश्य बदल जाता था।लोग अपने घरों में दुबक जाते थे। शांति से अपने घरो में रहते थे। इतनी शांति होती थी की माताएं अपने मरते हुए बेटो को "बेटा" भी नहीं कह पाती थी। इस शांति के बीच पहलवान के ढोलक की आवाज महामारी से अकेले लड़ती हुयी प्रतीत होती थी।

12:1:14:प्रश्न - अभ्यास - पाठके साथ:7

कुश्ती या दंगल पहले लोगों और राजाओं का प्रिय शौक हुआ करता था। पहलवानों को राजा लोगों के द्वारा विशेष सम्मान दिया जाता था-

(क) ऐसी स्थिति अब क्यों नहीं है?

(ख) इसकी जगह अब किन खेलों ने ले ली है?

(ग) कुश्ती को फिर से प्रिय खेल बनाने के लिए क्या-क्या कार्य किए जा सकते हैं?

उत्तर:

(क) कुश्ती, दंगल या पहलवानी राजाओं और आम लोगों के मनोरंजन और शौक का साधन थे। राजा उन्हें उचित सम्मान और सुविधाएँ देते थे। लेकिन अब पहले की तरह राजा भी नहीं रहे और मनोरंजन के कई साधन लोकप्रिय हो गए हैं।

(ख) कुश्ती की जगह अब अनेक आधुनिक खेल प्रचलन में हैं,जैसे : क्रिकेट,हॉकी,बैडमिंटन,टेनिस,फुटबॉल,शतरंज आदि**।**

(ग) कुश्ती को फिर से लोकप्रिय बनाने के लिए ग्रामीण स्तर पर कुश्ती प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा सकता है। पहलवानों को सुविधाओं के साथ-साथ उचित प्रशिक्षण दिए जाने की आवश्यकता है। इसके साथ ही इसे फैलाने और प्रसारित करने के लिए मीडिया को भी समर्थन करना चाहिए।

12:1:14:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ:8

आशय स्पष्ट करें-

आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी

चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।

उत्तर: वर्तमान पंक्ति से, लेखक फणीश्वर नाथ रेणु लोगों के असहनीय दुःख को संदर्भित करते हैं। सितारों के माध्यम से रेणु जी कहना चाहते हैं कि अकाल पीड़ित ग्रामीणों की पीड़ा को दूर करने वाला कोई नहीं था। ग्रामीणों के दुःख से प्रकृति भी दुखी थी। अगर एक भावुक सितारा आकाश से टूट कर पृथ्वी पर आना चाहता था तो उसकी रोशनी और शक्ति रास्ते में ही खत्म हो जाती है। रेणुजी कहते हैं कि स्थिर तारे चमकते हुए दिखाई देते हैं और टूटे हुए तारे समाप्त हो जाते हैं।

12:1:14:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ:9

पाठ में अनेक स्थलों पर प्रकृति का मानवीकरण किया गया है। पाठ में से ऐसे अंश चुनिए और उनका आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

1.अँधेरी रात चुपचाप आंसू बहा रही थी- लेखक ने यहाँ रात का मानवीकरण किया है। पूरा गाँव सूखा और महामारी की चपेट में था और लोग मरते जा रहे थे। चारों ओर मौत का सन्नाटा छाया था। ठंढ में ओस की बूँदें रात के आंसू जैसी प्रतीत हो रही थी। यह दृश्य देखकर ऐसा लगता है जैसे गाँव वालों की पीड़ा पर रात रो कर आंसू बहा रही हो।

2.तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे - लेखक रेणु टूटे तारे भावुक तथा झिलमिलाते तारे को हँसते हुए बता कर उनका मानवीकरण किया है। ग्रामीणों की पीड़ा देखकर यदि को तारा भावुक होकर टूट जाता और पृथ्वी की ओर चलता है परन्तु राशि में ही उसकी सारी शक्ति और चमक समाप्त हो जाती है। उस टूटे तारे पे बाकि तारे हसंते है झिलमिलाते हुए प्रतीत होते है।

3.ढोलक लुढ़की पड़ी थी- यहाँ पहलवान की मृत्यु की व्याख्या है। पहलवान और उसके ढोलक एक दूसरे के पूरक हैं। ढोलक का बजना पहलवान के जीवन का पर्याय है और ढोलक के लुढ़कने से पहलवान की मृत्यु के बारे में बताया जाता है

PAGE 116, अभ्यास - पाठकेआसपास

12:1:14:प्रश्न - अभ्यास - पाठके आसपास:1

पाठ में मलेरिया और हैज़े से पीड़ित गाँव की दयनीय स्थिति को चित्रित किया गया है। आप किसी ऐसी अन्य आपद स्थिति की कल्पना करें और लिखे कि आप ऐसी स्थिति का सामना कैसे करेंगी/करेंगे?

उत्तर: इस पाठ में लेखक 'फणीश्वर नाथ रेणू' ने मलेरिया और हैजा से पीड़ित गाँव की विभीषिका और दयनीय स्थिति का चित्रण किया है । आजकल 'स्वाइनफ्लू' और 'डेंगू' जैसी बीमारी ने आम जनता को अपने शिकंजे में ले लिया है ।ऐसी स्थिति में सबको निम्नलिखित कार्य करने चाहिए:

1.रोगों के प्रति जागरूकता अभियान चलाकर उन्हें रोग सम्बन्धी जानकारियाँ देना।

2.उपरोक्त रोगों के रोगियों को उचित और सही इलाज की सलाह और जानकारी देना।

3.ज़ुकाम व बुखार के रोगियों को घर में रहने तथा मास्क लगाने की सलाह देना।

4.रोगियों की जांच में सहायता करना।

5.स्वच्छता अभियान में सहायता और योगदान करना।

12:1:14:प्रश्न - अभ्यास - पाठके आसपास:2

ढोलक की थाप मृत-गाँव में संजीवनी शक्ति भरती रहती थी- कला से जीवन के संबंध को ध्यान में रखते हुए चर्चा कीजिए।

उत्तर: एक उक्ति है कि “कला ही जीवन है”दूसरी उक्ति है कि “जीवन एक कला है”। इन दोनों उक्तियों को देखकर प्रतीत होता है कि कला तथा जीवन एक दूसरे से प्रेरित है। ये एक सिक्के के दो पहलु है। संगीत व काव्य निराशा और हताशा से भरे लोगों के मन में उत्साह का नव-जीवन का संचार करते हैं। युद्धभूमि में वीर रस की कवितायें जवानों में मर-मिटने का जोश और हौसला उत्पन्न करती है। हास्य-व्यंग्य की कवितायेँ सामान्य लोगों के मानसिक तनावों को दूर करती है तथा ऐसी कवितायेँ सुनकर भ्रष्टाचारी तिलमिला जाते हैं। इसी तरह चित्रकला, नृत्य और अभिनय सफलता और प्रसिद्धि तब प्राप्त करते हैं जब वे जीवन से जुड़े होते हैं। संगीत एक ऐसी अद्भुत चीज है जिसमें हजारों लोगों को एक साथ महसूस करते हुए देखा जा सकता है।

12:1:14:प्रश्न - अभ्यास - पाठके आसपास:3

चर्चा करें- कलाओं का अस्तित्व व्यवस्था का मोहताज़ नहीं है।

उत्तर: व्यस्था द्वारा प्रदान की गई सुविधा या सरकारी सहायता से कलाएँ फल-फूल सकती हैं। लेकिन उनका अस्तित्व व्यस्था प्रणाली पर नहीं बल्कि कड़ी मेहनत, समर्पण और निष्ठा पर निर्भर करता है। अगर व्यवस्था से पोषित एक कलाकार अपनी कला के प्रति समर्पित और वफादार नहीं है तो वह लोगों के बीच कभी अपनी खुद की पहचान और जगह नहीं बना पाएगा और कुछ ही समय में भुला दिया जाएगा। किसी भी कलाकार की कला को विकसित करने में उसकी कला के प्रति समर्पण भावना, अथक मेहनत और आम आदमी के प्यार और प्रशंसा जैसे आवश्यक तत्व होते हैं। जिस कलाकार के पास ये तत्व है उसे व्यवस्था द्वारा प्रदान सुविधाओं की आवयश्कता नहीं है।

PAGE 117, अभ्यास - भाषा की बात

12:1:14:प्रश्न - अभ्यास - भाषा की बात :1

हर विषय, क्षेत्र, परिवेश आदि के कुछ विशिष्ट शब्द होते हैं। पाठ में कुश्ती से जुड़ी शब्दावली का बहुतायत प्रयोग हुआ है।

उन शब्दों की सूची बनाइए। साथ ही नीचे दिए गए क्षेत्रों में इस्तेमाल होने वाले कोई पाँच-पाँच शब्द बताइए-

- **चिकित्सा**
- **क्रिकेट**
- **न्यायालय**
- **या अपनी पसंद का कोई क्षेत्र**

उत्तर:

1. **कुश्ती :** दंगल,अखाड़ा,दाँव,पेंच,चित-पट,पटखनी,धोबी-पछाड़ ।
2. **चिकित्सा :** एक्स-रे,इंजेक्शन,सलाइन,स्ट्रेचर,सिटी-स्कैन।
3. **क्रिकेट :** पवेलियन,गिल्ली,अम्पायर,बाउंड्री,पैड,ग्लोव्स।
4. **न्यायालय :** पैरवी,वकालतनामा, जिरह, गवाह, मुवक्किल,सेक्शन,एक्ट।
5. **फ़िल्म:** सेलिब्रिटी,कास्टिंग,स्क्रिप्ट,रिलीज़,ब्लॉक-बस्टर,प्लेबैक।

12:1:14:प्रश्न - अभ्यास - भाषाकीबात :2

पाठ में अनेक अंश ऐसे हैं जो भाषा के विशिष्ट प्रयोगों की बानगी प्रस्तुत करते हैं। भाषा का विशिष्ट प्रयोग न केवल

भाषाई सर्जनात्मकता को बढ़ावा देता है बल्कि कथ्य को भी प्रभावी बनाता है। यदि उन शब्दों, वाक्यांशों के स्थान पर किन्हीं अन्य का प्रयोग किया जा तो संभवतः वह अर्थगत चमत्कार और भाषिक सौंदर्य उद्‌घाटित न हो सके। कुछ प्रयोग इस प्रकार हैं-

- **फिर बाज़ की तरह उस पर टूट पड़ा।**
- **राजा साहब की स्नेह-दृष्टि ने उसकी प्रसिद्धि में चार चाँद लगा दिए।**
- **पहलवान की स्त्री भी दो पहलवानों को पैदा करके स्वर्ग सिधार गई थी।**

इन विशिष्ट भाषा-प्रयोगों का प्रयोग करते हुए एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर: शहर का दंगल राजा साहब की उपस्थिति के बिना संभव नहीं था। आज का दंगल बहोत ही रोमांचक था। पहलवान उधमसिंघ और सुलतान दोनों एक दूसरे से गुत्थम-गुत्था हुए और मिनटों तक अलग न हुए। कोई चित होने को तैयार नहीं था। तभी अचानक से उधमसिंघ ने दाँव काटा और फिर बाज़ की तरह सुलतान पर टूट कर उसे चारों खाने चित कर दिया। उधमसिंघ को राजा साहब ने राज-पहलवान

घोषित कर दिया। राजा साहब की स्नेह-दृष्टि ने उसकी प्रसिद्धि में चार चाँद लगा दिए। इसके बाद पहलवान उधमसिंघ का विवाह हो गया। कुछ समय बाद के माता-पिता की मृत्यु हो गयी। उसके बाद पहलवान की स्त्री भी दो पहलवानो को पैदा करके स्वर्ग सिधार गयी।

12:1:14:प्रश्न -अभ्यास-भाषा की बात :3

जैसे क्रिकेट की कमेंट्री की जाती है वैसे ही कुश्ती की कमेंट्री की गई है? आपको दोनों में क्या समानता और अंतर दिखाई पड़ता है?

उत्तर:

समानता: क्रिकेट की कमेंट्री तथा कुश्ती की कमेंट्री के बीच समानता ये है की दोनों में खेल के घटनाक्रम का वर्णन किया जाता है। दोनों में अंतर ये है की क्रिकेट में कमेंट्री शांति के साथ की जाती है तथा कुश्ती में कमेंट्री थोड़ी उत्तेजक होती है जो पहलवानो में जोश पैदा करती है। क्रिकेट में बल्लेबाज़ी,गेंदबाज़ी,क्षेत्ररक्षण आदि का वर्णन किया जाता है। जबकि कुश्ती में पहलवानों के दाँव-पेंचों का वर्णन किया जाता है।